पद १५९ (राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

विसरूनि गेल्यें गृह सुत धंदा। देहस्फूर्ती विरली गे।।२।। माणिक

म्हणे प्रभु पाहनि नयनीं। सर्व आशा पुरली गे।।३।।

कशी ही मुरली काय वद गे। स्वजनीं विजनीं धननीं मुरली

गे।।ध्रु.।। बोधक वचनें अमृतरूपिया। निजश्रवणीं सरली गे।।१।।

7		